प्रेरितों का विश्वास-कथन

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय
तीन

यीशु मसीह

THIRD MILLENNIUM
MINISTRIES
Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

1. परिचय (1:01) 4

2. ईश्वरत्व (2:55) 4

A. परमेश्वर का पुत्र (4:35) 4

B. प्रभु (13:13) 6

3. मनुष्यत्व (18:12) 7

A. अनुभव (19:27) 7

1. वंश (20:24) 7
2. शरीर (24:49) 8
3. आत्मा (27:02) 9
4. पुनरुत्थान (29:17) 10

B. कार्यभार (32:03) 10

1. पुराने नियम की पृष्ठभूमि (32:43) 10
2. यीशु में पूर्णता (38:28) 11

C. स्वभाव (44:22) 11

4. कार्य (57:29) 13

A. दीन होना (58:26) 13

1. देहधारण (59:37) 13
2. दुःख-भोग (1:07:47) 14

B. ऊँचा उठाया जाना (1:17:36) 16

1. पुनरुत्थान (1:19:05) 17
2. स्वर्गारोहण (1:23:12) 17
3. सिंहासन पर विराजमान होना (1:26:06) 18
4. न्याय (1:28:45) 18
5. निष्कर्ष (1:31:41) 18

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 19

उपयोग के प्रश्न 24

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - **पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें** — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - **उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें** — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

1. परिचय (1:01)

इतिहास में किसी व्यक्ति को इतनी प्रशंसा नहीं मिली या न ही किसी ने समाज पर इतना प्रभाव डाला जितना नासरत के यीशु ने।

2. ईश्वरत्व (2:55)

मसीहियों ने यीशु के ईश्वरत्व को दर्शाने के लिए सदैव मसीह, परमेश्वर का पुत्र, और प्रभु जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया है।

A. परमेश्वर का पुत्र (4:35)

"परमेश्वर का पुत्र" प्रायः उन प्राणियों के लिए प्रयोग किया जाता है जो ईश्वरीय नहीं होते :

- स्वर्गदूत (अय्यूब 1:6; 2:1)
- इस्राएल राष्ट्र (निर्गमन 4:22; होशे 1:1)
- इस्राएल के राजा (2 शमूएल 7:14; भजन 2:7)
- आदम (लूका 3:38)
- विश्वासी (मत्ती 5:9, 45; लूका 20:36; रोमियों 8:14, 19; गलातियों 3:26)

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यीशु एक अद्‌भुत रूप में परमेश्वर का पुत्र है।

त्रिएकता की धर्मशिक्षा में यीशु को परमेश्वर के ईश्वरीय और अनंत पुत्र के रूप में दर्शाया गया है।

अस्तित्व-मीमांसा संबंधी दृष्टिकोण :

- पिता और पवित्र आत्मा के साथ सामर्थ और महिमा में समान
- असीमित, अनंत, अपरिवर्तनीय
- समान ईश्वरीय चरित्र
    - बुद्धि
    - सामर्थ
    - पवित्रता
    - न्याय
    - भलाई
    - सत्य

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

विधानीय दृष्टिकोण :

- भिन्न उत्तरदायित्व
- अधिकार के भिन्न स्तर
- भिन्न नियुक्त भूमिकाएँ
    - मसीह पिता के अधिकार के अधीन है

    - पुत्र का पवित्र आत्मा पर अधिकार है

B. प्रभु (13:13)

कुरिओस : शासक या स्वामी (आम)

जब यहूदी विद्वानों ने पुराने नियम का अनुवाद किया तो उन्होंने परमेश्वर के पवित्र नाम, यहोवा का अनुवाद करने के लिए *कुरिओस* शब्द का प्रयोग किया।

नए नियम में *कुरिओस* शब्द का प्रयोग प्रायः यह अर्थ देता है कि यीशु ईश्वरीय है।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मसीही जीवन के लिए उपयोग :

- परमेश्वर के रूप में यीशु को मानना और उसकी आराधना करना।
- उससे वैसे ही प्रार्थना करना जैसे हम पिता और आत्मा से करते हैं।
- यह जानना कि स्वयं परमेश्वर ने हमें पाप से छुड़ाया है।

3. मनुष्यत्व (18:12)

आरंभिक कलीसिया में यीशु के मनुष्यत्व पर प्रश्न उठाना लोगों के लिए आम बात थी।

A. अनुभव (19:27)

यीशु के अनेक अनुभव प्रमाणित करते हैं कि वह वास्तव में मानवीय था।

1. वंश (20:24)

गर्भधारण और जन्म :

- असामान्य विवरण
    - पवित्र आत्मा द्वारा गर्भ-धारण
    - माँ एक कुंवारी थी

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- मूलभूत मानवीय अनुभव
    - अपनी माँ के गर्भ में एक शिशु के समान आरंभ

    - वैसे ही आकर दिया गया जैसे परमेश्वर प्रत्येक बच्चे को देता है

    - न तो जादू से प्रकट हुआ और न स्वर्ग से सीधे नीचे उतरा

2. शरीर (24:49)

विश्वास-कथन यीशु के ऐसे अनुभवों को बताता है जो तभी संभव हैं जब वह वास्तव में एक भौतिक मनुष्य हो।

यीशु एक भौतिक मानवीय देह के साथ एक वास्तविक मनुष्य था।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मानवजाति के पापों की क्षमा के लिए एक सच्चे मनुष्य को भौतिक रूप से ईश्वरीय दंड सहना पड़ा।

3. आत्मा (27:02)

मनुष्य के पास एक नश्वर शरीर होता है जिसमें एक अनश्वर आत्मा वास करती है।

“प्राण” और “आत्मा” शब्द हमारे संपूर्ण अस्तित्व के आंतरिक, अभौतिक पहलुओं को दर्शाते हैं।

जब यीशु का शरीर कब्र में रखा गया तब उसकी आत्मा या प्राण पिता परमेश्वर के हाथों में था। (लूका 23:46)

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

4. पुनरुत्थान (29:17)

पुनरुत्थान प्रमाणित करता है कि यीशु एक वास्तविक मनुष्य था क्योंकि इसमें उसकी वास्तविक मानवीय देह का उसकी वास्तविक मानवीय आत्मा के साथ पुनर्मिलन हुआ।

B. कार्यभार (32:03)

शब्द मसीह वास्तव में यीशु के कार्य का शीर्षक है, जैसे कि "राजा" और "न्यायी"।

1. पुराने नियम की पृष्ठभूमि (32:43)

ख्रिस्तोस या मसीह :

- *ख्रिस्तोस* (यूनानी)
- *मशिआह* या मसीहा (इब्रानी)
- अभिषिक्त
    - कोई भी जिसे परमेश्वर ने विशेष रूप से अपनी सेवा के लिए नियुक्त किया
    - दाऊद का पुत्र
    - दाऊद के वंश से आया महान राजा

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. यीशु में पूर्णता (38:28)

यीशु वह महान मसीहा है जिसकी प्रतीक्षा पुराना नियम कर रहा था।

मसीहा को मानवीय होना आवश्यक था :

- दाऊद का पुत्र

- पाप-क्षमा के लिए बलिदान

- दूसरा आदम

C. स्वभाव (44:22)

यीशु में वे सारे चरित्र और विशेषताएं हैं जो मानवीय होने के लिए आवश्यक हैं।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

यीशु अन्य मनुष्यों से कुछ महत्वपूर्ण रूपों में अलग है :

- सिद्ध मनुष्य

- दो स्वभाव

हाइपोस्टाटिक संयोजन : दो भिन्न स्वभावों (ईश्वरीय स्वभाव और मानवीय स्वभाव) के साथ यीशु एक व्यक्ति है, और प्रत्येक स्वभाव की अपनी-अपनी विशेषताएं हैं।

- फिलिप्पियों 2:5-7

- चाल्सीदोनियन विश्वास-कथन
    - एक व्यक्ति
    - दो स्वभाव

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जीवन जीने के लिए उपयोग :

- हमारे पास हमारे और परमेश्वर के बीच एक प्रभावशाली मानवीय मध्यस्थ है।

- यीशु ने एक नई मानवीय प्रजाति की रचना की है।

- हम साहस के साथ अनुग्रह के सिंहासन के पास जा सकते हैं।

4. कार्य (57:29)

A. दीन होना (58:26)

परमेश्वर के पुत्र ने अपनी महिमा को ढांप दिया और दृष्टि से छिपा दिया और स्वयं को दुःख और अपमान के अधीन कर दिया।

1. देहधारण (59:37)

देहधारण यीशु के स्थाई रूप में मानवीय स्वभाव को लेने के बारे में बताता है।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

देह्धारण के कार्य ने तीन बातों को पूरा किया :

a. दाऊद के वंश का राजा

यीशु दाऊद के सिंहासन का दावा तभी कर सकता था जब उसका एक ऐसा मानवीय पिता हो जो दाऊद के वंश का हो।

b. महायाजक

देहधारण ने उसे वह दया और करुणा प्रदान की जिसकी आवश्यकता उसे एक प्रभावशाली महायाजक बनने के लिए थी।

c. पाप-क्षमा के लिए बलिदान

अपने लोगों के लिए मरने हेतु उसे मानवीय होना जरुरी था।

2. दुःख-भोग (1:07:47)

दुःख-भोग यीशु के दुखों और मृत्यु को दर्शाता है।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

आज्ञाकारिता सिखाने और परमेश्वर पिता के हाथों में उसे सौंपने के लिए यीशु का दुःख उठाना आवश्यक था।

यीशु की मृत्यु से ही हमारे पाप क्षमा हुए हैं और हमें उद्धार मिला है।

यीशु मृत्यु के आम मानवीय अनुभव से होकर गया। प्रेरितों का विश्वास-कथन कहता है, "वह अधोलोक में उतरा।"

व्याख्या :

- यीशु को गाड़ा गया (असंभव)

- अधोलोक : पृथ्वी के नीचे का भाग जहाँ मृतकों की आत्माएं रहती हैं।

- मृत्यु और पुनरुत्थान के बीच यीशु की आत्मा पृथ्वी के नीचे के भाग में उतरी।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नरक की प्रकृति :

- शिओल (इब्रानी—पुराना नियम)

- हेड्स (यूनानी—नया नियम)

सबसे संभावित उत्तर यह है कि यीशु की मानवीय आत्मा उस स्थान में उतरी जहाँ मृतकों की आत्माएं थीं।

यीशु का दुःख-भोग दर्शाता है कि एक पतित संसार में सच्चा मनुष्य होने का अर्थ क्या है।

B. ऊँचा उठाया जाना (1:17:36)

मसीह का ऊँचा उठाया जाना उसकी छुपी हुई महिमा को प्रकट करने से कहीं बढ़कर था।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. पुनरुत्थान (1:19:05)

मसीह का पुनरुत्थान हमारे उद्धार के लिए उतना ही महत्वपूर्ण था जितनी उसकी मृत्यु।

उसके पुनरुत्थान के द्वारा हम नए जीवन में उठाए गए हैं।

2. स्वर्गारोहण (1:23:12)

यीशु देहिक रूप में स्वर्ग में उठाया गया।

यीशु

- स्वर्ग में विश्वासियों के लिए स्थान तैयार करने के लिए गया (यूहन्ना 14:2-3)

- कलीसिया को सामर्थी बनाने में पवित्र आत्मा को भेजने के लिए गया (यूहन्ना 16:7)

- क्रूस पर शुरू किए गए पापक्षमा के कार्य को पूरा करने के लिए गया (इब्रानियों 8-9)

- हमारे लिए मध्यस्थता करने के लिए गया (इब्रानियों 7:24-25)

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. सिंहासन पर विराजमान होना (1:26:06)

यीशु हमारा महान मानवीय राजा है जिसका सिंहासन स्वर्ग में पिता के महान सिंहासन के दाहिनी ओर है।

यीशु को ऐसा याजक भी कहा जाता है जो अपने लोगों के लिए मध्यस्थता करता है।

4. न्याय (1:28:45)

यीशु उनके विरुद्ध राजकीय दंड जारी करेगा जिन्होंने उसकी आज्ञाओं का उल्लंघन किया और उसके राजत्व तथा राज्य का सम्मान नहीं किया।

शुभ संदेश : जो विश्वास के द्वारा मसीह से जुड़े हैं वे अनंत आशीष और उत्तराधिकार को प्राप्त करेंगे।

बुरा संदेश : जो मसीह में नहीं पाए जाते वे परमेश्वर के प्रचंड क्रोध का सामना करेंगे।

5. निष्कर्ष (1:31:41)

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. “परमेश्वर का पुत्र” से पवित्रशास्त्र का क्या अर्थ है, जब इसे यीशु पर लागू किया जाता है?

2. किस प्रकार शीर्षक “प्रभु” यीशु के ईश्वरत्व की ओर संकेत करता है?

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. किन रूपों में यीशु के अनुभव प्रमाणित करते हैं कि वह वास्तव में मानवीय था?

4. पुराने नियम के शीर्षक “ख्रिस्तोस” या “मसीह” का क्या अर्थ है? यीशु इस कार्य को किस प्रकार पूरा करता है?

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. किस प्रकार मसीह के कार्यभार की पूर्णता उसके मनुष्यत्व की ओर संकेत करती है?

6. यीशु के मानवीय स्वभाव और ईश्वरीय स्वभाव के साथ इसके संबंध के विषय में चर्चा करें।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. देहधारण क्यों आवश्यक था? इसके द्वारा यीशु ने क्या पूरा किया?

8. यीशु ने स्वयं को पकड़वाए जाने, दुःख सहने और क्रूस पर चढ़ाए जाने के अधीन क्यों कर दिया?

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. प्रेरितों के विश्वास-कथन में पाए जाने वाले वाक्यांश, “वह अधोलोक में उतरा” को स्पष्ट करें।

10. यीशु के ऊंचे उठाए जाने के चार भागों का वर्णन कीजिए।

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. किस प्रकार यीशु का ईश्वरत्व हमें उसमें मजबूत भरोसा प्रदान करता है?

2. किस प्रकार यीशु का मनुष्यत्व हमारे साथ एक पहचान बनाने में उसकी सहायता करता है?

3. किस प्रकार मसीह के ईश्वरत्व और मनुष्यत्व सहित त्रिएकता की एक सही समझ हमारे प्रार्थना करने के तरीके को प्रभावित करती है?

4. किस प्रकार मसीह का ईश्वरत्व हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम को समझने में हमारी सहायता करता है?

5. यीशु की एक वास्तविक, भौतिक देह का होना हमें हमारी अपनी देह को किस प्रकार इस्तेमाल करने को प्रेरित करता है?

6. किस प्रकार यीशु की हमारे मध्यस्थ होने की भूमिका परमेश्वर के समक्ष हमें निडरतापूर्वक साहस प्रदान करती है? किन रूपों में एक मसीही को एक सही रूप में परमेश्वर का भय मानना है?

7. किस प्रकार मसीह के द्वारा सहा गया अपमान हमें प्रोत्साहित करता है जब हम इस जीवन में क्लेशों और संघर्षों का सामना करते हैं?

8. किस प्रकार मसीह में हमारा नया जीवन मृतकों में से उसके पुनरुत्थान द्वारा जनित है?

9. यीशु की भौतिक उपस्थिति की अपेक्षा कलीसिया पवित्र आत्मा की उपस्थिति से अधिक अच्छी स्थिति में क्यों है?

10. जब हम अंतिम न्याय की ओर आगे बढ़ते हैं तो विश्वास-कथन हमें किस प्रकार राहत प्रदान कर सकता है?

11. इस अध्याय में आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2010 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org